साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का अंतिम दिन

संगोष्ठी : अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ

आओ कहानी बुने –– बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियाँ

अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजों का एजेंडा औपनिवेशिक था –– इंद्रनाथ चौधुरी

संत साहित्य उच्च वर्ग की भाषा का लोकभाषाईकरण है –– अवधेश कुमार सिंह

नई दिल्ली, 20 फ़रवरी 2016 । साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए गए छः दिवसीय साहित्योत्सव के अंतिम दिन जहाँ बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम 'आओ कहानी बुने' आयोजित किया गया वहीं 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि अनुवाद के लिए अंग्रेज़ों का नज़रिया औपनिवेशिक था। उन्होंने उन्हीं कृतियों को अनुवाद के लिए चुना जिनसे भारत के प्रति उनके नज़रिए की पुष्टि होती थी। सर विलियम जोंस जिन्होंने भारत में अनुवाद के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया ने भी ग्यारहवीं शताब्दी के बाद के काल को अंधकार युग कहा है। जबकि यह काल भारतीय साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण भक्ति काल का समय है। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि उस समय यूरोप में भी यही काल अंधकार काल की संज्ञा प्राप्त कर चुका था। आगे उन्होंने अनुवाद की राजनीति पर चर्चा करते हुए कहा कि प्राचीन काल में उच्चता का जो दर्जा संस्कृत को प्राप्त था वो अब अंग्रेज़ी और हिंदी ने प्राप्त कर लिया है। इससे हमारी भारतीय साहित्यिक परंपरा को समझने में काफ़ी मुश्किलें हो रही हैं। उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी या हिंदी अनुवाद के लिए चुनी जा रही पुस्तकों के पीछे एक ख़ास तरीके की राजनीति काम कर रही है जिसके चलते श्रेष्ठ पुस्तकें इन दोनों भाषाओं या अन्य क्षेत्रीय भाषा में नहीं आ पा रही है।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य अवधेश कुमार सिंह ने दिया। उन्होंने अनुवाद की भारतीय साहित्यिक परंपरा को चार भागों में बाँटते हुए कहा कि हमारा पूरा भक्तिकालीन साहित्य जिसे हम संत साहित्य भी कह सकते हैं उच्च वर्ग की भाषा का लोकभाषाईकरण है। यानी आम जनता तक अपनी बात पहुँचाने का प्रयास। औपनिवेशिक काल की चर्चा करते हुए उन्होंने जहाँ अकबर के दरबार द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा की वहीं आधुनिक काल में

उन्होंने भारतेंदु और प्रेमचंद की चर्चा की। इस दौरान महादेव भाई द्वारा गाँधी के विपुल लेखन को अनुवाद करवाने की चर्चा भी हुई।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अनुवाद की राष्ट्रीय संगोष्ठी में सबसे पहले मैं अनुवाद के पूवजों को स्मरण करना ज़रूरी समझता हूँ। उन्होंने कहा कि आज जब संचार और मीडिया के उत्कृष्ट साधन हमारे सामने मौजूद हैं ऐसे में ये कल्पना करना भी मुश्किल है कि आज से दो–ढाई हज़ार साल पहले से लोग देशों की सीमाएँ पार कर केवल अनुवाद के लिए इस धरती से उस धरती पर आते–जाते रहे हैं। ज्ञान के इन पिपासुओं ने भौगोलिक कठिनाईयों के साथ–साथ राजाओं से लेकर डाकुओं तक की तलवारों का सामना किया। उन्होंने ह्वेन सांग कुमारजीत, धर्मकीर्ति, आश्वघोष, आदि की चर्चा की। आगे उन्होंने कहा कि भक्ति काल में संत साहित्य द्वारा कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी भारतीय भाषाओं में महत्त्वपूर्ण अनुवाद हुए। ये शताब्दी अनुवाद की शताब्दी है। अनुवाद के द्वारा ही आज हम अपने संसार को 'ग्लोबल विलेज' कह पा रहे हैं।

समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने प्रस्तुत किया और अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी आमंत्रित विद्वानों का स्वागत किया। इसके बाद आयोजित तीन अन्य सत्र –– जो भक्ति आंदोलन में अनुवादकीय आदान–प्रदान, औपनिवेशिक भारत में अनुवादकीय उद्यम, समकालीन अनुवादकीय पहल और प्रभाव पर केंद्रित थे में निर्मल कांति भट्टाचार्जी, आलोक भल्ला और नमिता गोखले की अध्यक्षता में सात विद्वानों द्वारा अपने आलेख प्रस्तुत किए गए।

बच्चों के लिए आयोजित विशेष कार्यक्रम – 'आओ कहानी बुने' के अंतर्गत आज बच्चों के लिए विभिन्न तरह की प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात लेखक प्रयाग शुक्ल ने किया। इसके बाद साहित्य अकादेमी द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित चार किताबों का विमोचन किया गया, जिसमें दो चीनी बाल पुस्तकों के अनुवाद थे और एक कन्नड भाषा से अनुवाद तथा बाल साहित्य पर एक पुस्तक थी। सांस्कृतिक कार्यक्रम पंडित दीनदयाल उपाध्याय विकलांग जनसंधान द्वारा प्रस्तुत किया गया और अनूपा लाल और वैलेटिना द्वारा बच्चों को कहानियाँ सुनाई गई। सृजनात्मक लेखन की कार्यशाला प्रख्यात अंग्रेजी लेखक राहुल सैनी द्वारा संचालित की गई तथा पेंटिंग और कार्टून कार्यशाला एस.वी. रामाराव एवं सुधीरनाथ द्वारा संचालित की गई। दो आयु वर्गों में हिंदी एवं अंग्रेज़ी में कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इनके विषय थे –– स्वच्छ भारत और बढ़ता प्रदूषण। कार्यक्रम के अंत में पुरस्कार वितरण समारोह हुआ।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी : गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव के अंतिम दिन आज 'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक', 'संस्कृति और शिक्षा', 'धर्म और लोकतंत्र' पर तीन सत्र हुए जिनकी अध्यक्षता क्रमशः नंद किशोर आचार्य, एच.एस. शिवप्रकाश और पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की।